सकारात्मक दृष्टिकोण सबसे बड़ी उपलब्धि : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 23 जून।

आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में मंगलवार को उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए बालमुनियों की ओर इंगित करते हुए कहा कि मर्यादा महोत्सव, आचार्य का पट्टोत्सव, आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव आदि आयोजन होते हैं वे हमारे साहित्यिक प्रतिभा को व कौशल को बढ़ाने वाले होते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने विकास की ओर बढने की प्रेरणा देते हुए कहा कि चाहे पट्टोत्सव है और गीत गाना है, काव्य के माध्यम से बोलना है किंतु यह आवश्यक है अच्छी तैयारी के साथ बोलें तो तेरापंथ धर्मसंघ का और अच्छा विकास होता रहेगा। उन्होंने कहा कि समाज जिन तत्त्वों से प्रभावित होता है उस पर विचार करना चाहिए। हर सप्ताह पन्द्रह–बीस मिनट बोलें और उसकी समीक्षा भी करनी चाहिए।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि कार्यक्रम की सम्पन्नता पर यदि आप लोग कुछ मांगना चाहें तो अगर आगम की भाषा में मांगे तो प्रभो! हमारी तेजस्वीता बढे, गम्भीरता बढे और विनम्रता बढे तो सिद्धि अपने आप मिल सकती है। इसके साथ सकारात्मक दृष्टिकोण, सबसे बड़ी उपलब्धि है। व्यक्ति छोटी बातों में न उलझें, अच्छा स्वभाव रहे। समग्र श्वास, सकारात्मक दृष्टिकोण, चित्त की निर्मलता, गंभीरता बढती है तो अच्छा विकास हो सकता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने दीर्घ जीवन के रहस्यों की चर्चा करते हुए कहा कि आसन–प्राणायाम व भाव शुद्धि के द्वारा लंबी आयु प्राप्त हो सकती है किंतु इसका मुख्य कारण आयुष्यकर्म का बंध मानना चाहिए जिससे लंबी आयु प्राप्त हो सकती है।

आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मोत्सव के तीसरे दिन मंगलवान को साध्वी विमलप्रज्ञा, साध्वी आरोग्यश्री ने आलौकिक व्यक्तित्व और आचार्य महाप्रज्ञ के दीर्घ जीवन के रहस्यों के बारे में वक्तव्य के द्वारा प्रस्तुति दी। इसी श्रृंखला में साध्वी प्रभाश्री, मुनि ऋद्धकरण, मुनि राजकुमार, सेवाकेन्द्र की साध्वियों ने गीत के द्वारा अपनी भावनाएं व्यक्त की। इसके साथ साधुवृंद व साध्वीवृंद द्वारा समुह गीत प्रस्तुत किया गया। समणी प्रणवप्रज्ञा व स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल की सदस्याओं द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। सुरेन्द्र बोरड़ व डॉ. सुशीला बाफना ने अपने विचार प्रस्तुत किये।